अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''अभिमन्यु अनत का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' पृ.1 - 21

प्रास्ताविक

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 परिवार

1.1.3 शिक्षा

1.1.4 विवाह

1.1.5 संतान

1.1.6 साहित्यिक प्रेरणा

1.1.7 पठन-पाठन

1.1.8 प्रभाव

1.1.9 रुचि

1.1.10 साहित्य सृजनारंभ

1.1.11 नौकरी

1.1.12 पुरस्कार

1.2 साहित्यिक व्यक्तित्व

1.2.1 कवि

1.2.2 उपन्यासकार

1.2.3 कहानीकार

1.2.4 नाटककार

1.2.5 एकांकीकार

1.2.6 निबंधकार

1.3 *कृतित्व*

1.3.1 उपन्यास

1.3.2 कहानी

1.3.3 नाटक

1.3.4 कविता

1.3.5 निबंध

1.3.6 जीवनी

1.3.7 संस्मरण

1.3.8 यात्रा विवरण

1.3.9 आत्मकथा

1.3.10 डायरी लेखन

1.3.11 अनुवाद

1.3.12 संकलन

1.3.13 संपादन

1.3.14 संपादक

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - ''विवेच्य कहानियों का विषयपरक विवेचन'' पृ.22-39

प्रस्तावना

2.1 *अभिमन्यु अनत के 'वह बीच का आदमी' में निहित कहानियों का विषयपरक विवेचन*

2.1.1 आम आदमी का संघर्ष

2.1.2 स्वाभिमान की रक्षा

2.1.3 जिम्मेदारी का अभाव

2.1.4 शोषण

2.1.5 बाल मनोविज्ञान का चित्रण

2.1.6 खेत की ओर लौटना

2.1.7 शारीरिक कुरूपता एवं कड़वाहट

2.1.8 शारीरिक कुरूपता और मन की सुंदरता

2.1.9 नियति का शिकार

2.1.10 बीमार पति की मानसिकता

2.1.11 खालीपन के कारण आत्मनिर्वासित

2.1.12 व्यसनाधीनता

2.1.13 समाजसेवा की भावना

2.1.14 लड़के का अधूरा सपना

2.1.15 अंतर धर्मीय विवाह की समस्या

2.1.16 विधवा प्रेम

2.1.17 कल्पना जगत में विचरन

2.1.18 जुए की लत

2.1.19 मजदूरी की समस्या

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय – ''विवेच्य कहानियों में आम आदमी के संघर्ष का मूल्यांकन'' पृ.40–48

प्रस्तावना

3.1 आर्थिक संघर्ष

3.1.1 बूढ़ापे में काम करना

3.1.2 न चाहनेवाला काम करना

3.1.3 इच्छाओं को दबाना

3.1.4 शरीर को हानिकारक काम करना

3.1.5 हालात से समझौता करके काम करना

3.2 प्रेम में संघर्ष

3.2.1 जीवन का त्याग

3.2.2 समाज के बंधनों की पर्वा न करना

3.2.3 परिवार का विरोध करना

3.3 भावात्मक संघर्ष

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - ''विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अधययन'' पृ.49-105

प्रस्तावना

4.1 शिल्प

4.1.1 शिल्प का स्वरूप

4.1.2 शिल्प का महत्त्व

4.2 कहानी में कथावस्तु का महत्त्व

4.2.1 कथावस्तु की प्रधानता तथा अनिवार्यता

4.2.2 आलोच्य कहानियों की कथावस्तु

4.3 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

4.3.1 चरित्र-चित्रण का स्वरूप

4.3.2 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व

4.3.3 प्रमुख पुरुष पात्र

4.3.4 प्रमुख नारी पात्र

4.3.5 गौण पुरुष-नारी पात्र

4.4 कथोपकथन

4.4.1 कथोपकथन के भेद

4.4.2 कथोपकथन के गुण

4.4.3 कथोपकथन का महत्त्व

4.4.4 चरित्र-चित्रण में सहायक कथोपकथन

4.4.5 कथावस्तु के विकास में सहायक कथोपकथन

4.5 देश, काल तथा वातावरण

4.5.1 परिवेश के गुण

4.5.2 परिवेश के भेद

4.5.3 परिवेश का महत्त्व

4.5.4 आलोच्य कहानियों में परिवेश का मूल्यांकन

4.5.4.1 ग्रामांचल का परिवेश

4.5.4.2 प्राकृतिक परिवेश

4.5.4.3 उदासी का वातावरण

4.5.4.4 घुड़दौड़ का परिवेश

4.6 भाषा

4.6.1 भाषा के गुण

4.6.2 भाषा के विविध रूप

4.6.3 भाषा का महत्त्व

4.6.4 उर्दू शब्द

4.6.5 अंग्रेजी शब्द

4.6.6 द्विरूक्त शब्द

4.6.7 फ्रेंच वाक्य

4.6.8 भोजपुरी वाक्य

4.6.9 अंग्रेजी वाक्य

4.6.10 व्यंग्यात्मक वाक्य

4.6.11 मुहावरे

4.6.2 शैली

4.6.2.1 शैली का स्वरूप

4.6.2.2 शैली के गुण

4.6.2.3 शैली के भेद

4.6.2.4 आत्मकथात्मक शैली

4.6.2.5 कथात्मक शैली

4.6.2.6 पूर्वदीप्ति शैली

4.6.2.7 स्वप्न शैली

4.7 शीर्षक

4.7.1 शीर्षक का महत्त्व

4.7.2 आलोच्य कहानियों के शीर्षक का मूल्यांकन

निष्कर्ष

उपसंहार पृ.106-114

संदर्भ ग्रंथ सूची पृ.115-117